सांस्कृतिक प्रदूषण की शिकार युवा पीढ़ी

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

भारतीय संस्कृति विश्व की उन दुर्लभ सभ्यताओं में से है, जिसने हजारों वर्षों के उतार-चढ़ाव, आक्रमणों, राजनीतिक परिवर्तन और सामाजिक संक्रमणों के बावजूद अपनी मूल मान्यताओं, मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना को संरक्षित रखा है। इसी संस्कृति ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'सत्यं वद, धर्मं चर', 'अहिंसा परमो धर्मः' जैसे आदर्शों के माध्यम से मनुष्य को उत्कृष्टता, संयम और संतुलन का मार्ग दिखाया। परंतु आधुनिक समय में विशेषकर किशोर पीढ़ी का भारतीय संस्कृति से विमुख होना और सांस्कृतिक प्रदूषण का शिकार होना अत्यंत चिंता का विषय बन गया है।युवा देश के भविष्य निर्माता ही नहीं, अपितु इसकी भव्यता और महान संस्कृति की परम्परा के संरक्षक भी हैं, किन्तु 21वीं सदी के तकनीकी युग में किशोरों पर सोशल–मीडिया, उपभोक्तावाद, पश्चिमी जीवन-शैली और प्रतिस्पर्धा का ऐसा दबाव है कि वे भय, भ्रम और भटकाव के जाल में उलझते जा रहे हैं।आज युवाओं की मानसिकता विकलांग होती जा रही है। वे न तो अपना हित सोच पाते हैं और न ही देश और समाज के हित में कोई चिन्तन करते हैं।

भारतीय संस्कृति का आधारभूत स्वरूप एवं मूल्य

भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित माना जाता है-

1. **धर्म और आध्यात्मिकता**
2. **कर्तव्य–निष्ठा और आत्मसंयम**
3. **सामाजिक समरसता और परिवार–केंद्रित जीवन**
4. **प्रकृति, पर्यावरण और जीवन–मूल्यों का संतुलन**

किशोरों के जीवन में ये चारों स्तंभ मानसिक संतुलन, नैतिक शक्ति और व्यक्तित्व-निर्माण के लिए आवश्यक होते हैं। परंतु वर्तमान जीवनशैली में ये स्तंभ धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

भारत में युवा वर्ग की तीन श्रेणियाँ-

भारत में आज का युवा वर्ग तीन श्रेणियों में विभक्त है-

1.अनपढ या हिन्दी माध्यम से अल्पशिक्षित, यह कम पढ़ा-लिखा वर्ग है, जिसे हम श्रमिक वर्ग या निम्न वर्ग में रख सकते हैं।

2.हिन्दी माध्यम से पढ़ा सामान्य/उच्च्च शिक्षित वर्ग, जिसे हम मध्यम वर्ग कह सकते हैं।

3.अँग्रेजी माध्यम से कला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उच्च शिक्षा प्राप्त वर्ग, जिसे हम धनिक वर्ग या उच्च वर्ग में रख सकते हैं।

प्रथम वर्ग गरीबी से त्रस्त अपनी रोजी-रोटी की समस्या से ही निरन्तर जूझता रहता है, अतः वह पारिवारिक परम्परा से प्राप्त भारतीय संस्कृति के संस्कारों का ही अनुसरण करता है। द्वितीय वर्ग पारिवारिक परम्परा वश भारतीय संस्कृति से जुड़ा होता है, पर उसका कुछ भाग पश्चिमी संस्कृति की आधुनिकता की ओर उन्मुख रहता है।वह भौतिक संसाधनों के अभाव के कारण उसे अपना नहीं पाता। तृतीय वर्ग अंग्रेजी माध्यम की संस्थाओं से पढ़ा और कान्वेंट संस्कृति में पला होता है, इसलिए वह पश्चिमी सभ्यता का अनुयायी और अंग्रेजी भाषा का गुलाम बन जाता है। उसके लिए भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, भाषा और यहाँ तक कि मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा भी उसकी दृष्टि में असम्मान और उपेक्षा के विषय बन जाते हैं। तीनों ही वर्गों में कुछ अपवाद हैं, किन्तु शिक्षा का स्तर समान न होने के कारण इनमें सांस्कृतिक रूप से विभाजन की रेखा स्पष्ट दिखाई देती है। विडंबना यह है कि निज संस्कृति और निज भाषा के प्रति दुराव और उपेक्षा का भाव कदाचित् विश्व के किसी भी देश में नहीं दिखता, जितना अपने भारत देश में।

आधुनिक परिवेश में युवाओं की स्थिति

1. डिजिटल संस्कृति के प्रभाव

- भारत में 13 से 18 वर्ष के 82% किशोर स्मार्टफोन का उपयोग प्रतिदिन 4-6 घंटे तक करते हैं।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म- इंस्टाग्राम स्नैपचैट, यूट्यूब, वीडियो और रील मनोरंजन का प्राथमिक माध्यम बन चुके हैं।
- डिजिटल सामग्री में पश्चिमी जीवन-शैली, ग्लैमर और तात्कालिक सुखवाद प्रमुखता से दिखाई देता है। युवा पीढ़ी इस चकाचौंध से प्रभावित है, जो उसके सांस्कृतिक दृष्टिकोण को बदल रहा है।

परिणामस्वरूप युवा **भारतीय संवेदना आधारित आदर्शों**- संयम, मर्यादा, शिष्टाचार, श्रम-संस्कार-से दूर होते जा रहे हैं।

2. परिवार व्यवस्था में जीवन मूल्यों का ह्रास

- संयुक्त परिवारों का विघटन

- परिवार के सदस्यों में संवादहीनता
- माता-पिता की व्यस्तता और डिजिटल गैजेट्स का दखल
- मूल्यों पर घर–परिवार की भूमिका का कम होना
- सहजीवन (लिव इन रिलेशनशिप) के संबंधों का बढ़ता चलन
- भावावेश में प्रेम विवाह एवं उसके दुष्परिणाम
- बाल्यावस्था में ही अनैतिक संबंध बनाना, बाल यौन शोषण एवं अवैध गर्भपात

परिवार संस्था विखण्डित हो रही है, जिसके कारण किशोर संस्कार–परंपरा से दूर जा रहे हैं और दिग्भ्रमित होकर अपसंस्कृति के दलदल में फँस रहे हैं।

3. शिक्षा में सांस्कृतिक तत्वों का अभाव

- विद्यालयों में भारतीय संस्कृति, दर्शन, वेदों, पुराणों, नैतिक शिक्षा या भारतीय नायकों पर आधारित पाठ्य-सामग्री सीमित है।
- आधुनिक शिक्षा सूचना तो देती है, पर **चरित्र-निर्माण** और **मूल्य-संस्कार** की दृष्टि कमजोर है।

4. उपभोक्तावाद का आकर्षण

- विज्ञापन, ब्रांडिंग, फैशन ट्रेंड-सब किशोरों को आकर्षित करते हैं।
- “फास्ट लाइफ”, “YOLO”, “Do What Makes You Happy” जैसे नारे उन्हें जिम्मेदारी और संयम से दूर करते हैं।

5. अस्थिरता का परिवेश

- युवा वर्ग बेरोजगारी, अशिक्षा, अज्ञानता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अन्याय,शोषण आदि की भूलभुलैया में भटककर रह गया है। यह भटकाव उसे संस्कारहीन परिवेश में विरासत से मिला है।
- बच्चों को संस्कार न तो घर से प्राप्त होते हैं और न ही विद्यालयों से। युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते बच्चों के विचार पूरी तरह अपनी संस्कृति से कट जाते हैं।

भारतीय संस्कृति से क्यों विमुख हो रहे किशोर

1. सांस्कृतिक हीनताबोध

किशोरों के मन में यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि प्रगति का अर्थ पश्चिमी जीवन-शैली अपनाना है- भाषा, पहनावा, व्यवहार, मनोरंजन आदि।

इसके कारण वे अपनी संस्कृति को "पुरानी", और "रूढ़िवादी" समझकर उससे दूरी बना लेते हैं।

2. पॉप कल्चर का प्रभाव

आज के युवा पॉप कल्चर से प्रभावित होने के कारण वेब-सीरीज, रैप कल्चर, गेमिंग दुनिया, साइबर अपराध, अनाप-शनाप व्यय, स्वच्छंदता का दुरुपयोग, ड्रग्स एवं मदिरापान जैसी अवांछित गतिविधियों के चंगुल में फँसे हुए हैं। वे हिंसा, रोमांच, विद्रोह, स्वच्छंद प्रेम ,अनैतिक संबंध, ग्लैमर, हत्या, आत्महत्या. अपराध जैसी कुप्रवत्तियो में संलग्न हैं। उनके लिए जीवन-मूल्यों का कोई अर्थ नहीं रह गया है। इसके कारण भारतीय संस्कृति के आदर्श-मर्यादा, अनुशासन, सौम्यता-कम आकर्षक लगने लगते हैं।

3. पहचान-संकट

किशोर यह नहीं समझ पा रहे कि वे कौन हैं- भारतीय मूल्यों के वाहक या वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति के अनुयायी? इस द्वंद्व से उनमें भ्रम बढ़ रहा है और वे भटकाव के शिकार हैं। वे छोटे-मोटे जॉब प्राप्त करने में रुचि नहीं लेते। इस प्रकार जीवन का बहुमूल्य समय एवं अवसर व्यर्थ गँवा देते हैं।

4. असफलता एवं स्पर्धा का भय

अत्यधिक प्रतियोगिता, बोर्ड परीक्षाओं का दबाव, करियर की अनिश्चितता- सब मिलकर किशोरों में भय पैदा करते हैं। भारतीय संस्कृति में 'परिश्रम', 'धैर्य' और 'कर्मयोग' की शिक्षा है, पर उससे दूरी होने के कारण मानसिक शक्ति कम हो रही है और वे जीवन की सही दिशा तय नहीं कर पा रहे हैं।

5. शिक्षा संस्कार देने में अक्षम

विद्यालयों का वातावरण भारतीय संस्कारों के अनुरूप नहीं है। इसलिए बच्चों का मानसिक पोषण पाश्चात्य संस्कृति से हो रहा है। आज पाठ्यक्रमों में भारतीय संस्कृति को सम्मिलित नहीं किया गया है, नैतिक शिक्षा की उपेक्षा की जा रही है तथा बच्चों को 'मशीन 'बनाया जा रहा है। अध्यापकों का भी शिक्षा से अधिक ध्यान अर्थ - अर्जन पर केन्द्रित रहता है। जिससे शिक्षा ढेर सारी सूचनाएँ तो देती है, जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान नहीं।

संस्कृति से विमुखता के दुष्परिणाम

1. मानसिक तनाव एवं अवसाद

WHO के अनुसार भारत में प्रत्येक 7 में से 1 किशोर मानसिक तनाव एवं एकाकीपन से ग्रस्त है। सांस्कृतिक आधार कमजोर होने से वे जीवन–संकटों से जूझने की मनोवैज्ञानिक शक्ति खो देते हैं।

2. नशे और गलत आदतों की ओर झुकाव

संस्कृति से विमुखता और दिशाहीनता, दोनों मिलकर किशोरों को नशे, धूम्रपान, दुष्कर्म, हिंसा,अस्वच्छता, अशालीनता, अश्लीलता और असामाजिक व्यवहारों की ओर ले जा रही हैं। सांस्कृतिक शिक्षाएँ-"नशा न कर", "आत्मसंयम"-कहीं खोती जा रही हैं।

3. सामाजिक मूल्य स्थापना का संकट

सम्मान, आभार, परिवार, गुरु, परंपरा-इन मूल्यों से आज का किशोर धीरे-धीरे कट रहा है। भारतीय संस्कृति की विशेषता परिवार-व्यवस्था है, जिसका क्षय किशोरों को और अकेला कर रहा है।

4. जीवन-उद्देश्य का अभाव

वास्तविक भारतीय विचार-धर्म, सत्य, कर्तव्य, सेवा-से दूर होने के कारण किशोरों के पास लक्ष्य तो हैं, पर उद्देश्य नहीं। वे उपलब्धि तो चाहते हैं, पर जीवन-दृष्टि नहीं।

5. भौतिकवाद का दबाव

पश्चिमी देशों की जीवनशैली अपनाना, अधिकाधिक भोग में संलग्न होना, भौतिक सुख - सुविधाओं के लिए संघर्ष करना, भ्रष्टाचार और अपराध को बढ़ावा देना, समाज का अपराधीकरण, अहंभाव, आर्थिक विषमता, स्वार्थपरता, संस्कारहीनता आदि बढ़ते भौतिकवाद की ही देन है।

किशोरों के लिए भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

किशोरों को जीवन की सही दिशा देने के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। इसके लिए सद्ग्रथों, अच्छी पुस्तकें और महापुरुषों के जीवनियाँ पढ़नी चाहिए। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने ग्रंथ-पठन का महत्व बताते हुए कहा है-

जब साहित्य पढ़ो तब पहले पढ़ो, ग्रंथ प्राचीन।
पढ़ना हो विज्ञान अगर तो, पोथी पढ़ो नवीन।

1. गीता का संदेश

संत ज्ञानेश्वर ने कहा है-

"गीता विवेकरूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है। यह सिद्धांत - रत्नों का भण्डार है। खुला हुआ परम धाम है और सब विद्याओं की मूल भूमि है।"

गीता कहती है-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

अर्थ: अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं। यह विचार आज के तनावग्रस्त किशोरों के लिए मानसिक औषधि है।

2. उपनिषदों का सच्चा आत्मज्ञान

किशोरों में आत्मविश्वास की कमी का समाधान आत्म-ज्ञान है-

"आत्मानं विद्धि"-खुद को पहचानो।

3. भारतीय परिवार व्यवस्था

भारतीय परिवार समाज की इकाई होती है, जिसमें बालकों को संस्कारों की समुचित शिक्षा दी जाती है। सहानुभूति, करुणा, बड़ों का सम्मान, माता-पिता का आदर्शवाद-ये किशोरों के लिए सुरक्षा-कवच है, जो परिवार से प्राप्त होते हैं।

4. योग और प्राणायाम

यह मानसिक संतुलन, तनाव–नियंत्रण और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत प्रभावी है।

5. कला, साहित्य एवं संगीत-परम्परा

यदि किशोरों का रुझान कला, साहित्य एवं संगीत-परम्परा की ओर उन्मुख किया जाए, तो उनकी अभिरुचियों को सही दिशा प्राप्त हो सकती है। इससे उनमें सृजनात्मकता, धैर्य और अनुशासन जागृत होता है।

वर्तमान संकट के समाधान हेतु कुछ सुझाव

1. परिवार केन्द्रित-संवाद को बढ़ावा

परिवार 'पहली पाठशाला' है।अतः माता-पिता बच्चों के साथ मिलकर सांस्कृतिक अनुभव साझा करें-त्योहार, पूजा, भजन, यात्राएँ, परिवार-परंपरा की कहानियाँ।सप्ताह में एक 'नो फोन डे' रखा जा सकता है।परस्पर संवाद से उलझनों और समस्याओं का निराकरण किया जाना चाहिए।

2. शिक्षा-पाठ्यक्रम को भारतीय संस्कृति आधारित बनाना

बच्चों के पाठ्यक्रमों में भारतीय संस्कृति आधारित विषय - सामग्री रखी जाए। शिष्टाचार, सद्व्यवहार एवं संस्कार की सीख घर विद्यालय, दोनों स्थलों पर दी जाए। सनातन ग्रंथों,

रामायण एवं महाभारत के अनुकरणीय पात्रों, देशभक्तों, दार्शनिकों एवं महापुरुषों के चरित्रों से अवगत कराया जाए। आधुनिक प्रेरणा - पुरुषों, यथा विवेकानंद, नेताजी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, महामना मालवीय, लालबहादुर शास्त्री, टैगोर, अब्दुल कलाम जैसे व्यक्तित्वों के बारे में ज्ञान कराया जाए। शिक्षा में योग, ध्यान और नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए।

3. डिजिटल सामग्री के प्रति सजगता

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, किन्तु असीमित नहीं। सोशल-मीडिया उपयोग की सीमा तय की जाए तथा अश्लीलता परोसने वाले पटलों से दूर रहें। किशोरों को फ़िल्टर, फैक्ट-चेक, और डिजिटल-वेलनेस के बारे में शिक्षित किया जाए।रील,वीडियो, वीडियो गेम, चैटिंग पर समुचित नियंत्रण रखा जाए।

4. सकारात्मक रोल माडल बनाना

किशोर भारतीय युवा खिलाड़ियों, वैज्ञानिकों, कलाकारों और समाज–सेवियों को प्रेरणा स्रोत बनाएँ। उनके जीवन–मूल्यों पर आधारित कथाएँ और डॉक्यूमेंटरी दिखाना।

5. भारतीय कला-संस्कृति के स्थलों तथा कार्यक्रमों से जोड़ा जाए

किशोरों को समय-समय पर मंदिर, तीर्थ, पर्यटन-स्थलों, ऐतिहासिक स्थानों एवं संग्रहालयों की यात्राएँ करायी जाएँ, जिससे वे भारत के प्राकृतिक एवं गौरवशाली तथ्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकें। उनकी संगीत, नृत्य, योग, संस्कृत-शिक्षण, लोक-कला आदि में भागीदारी बढ़ायी जाए।

6. मनोवैज्ञानिक परामर्श

किशोरों को अनेक व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जिसका समाधान वे स्वयं नहीं कर पाते या किसी से कहने में संकोच करते हैं। अतः माता - पिता को इसकी स्वयं जानकारी लेकर वांछित समाधान करें। विद्यालयों में काउंसलिंग प्रणाली मजबूत की जाए।किशोरों के भय-असफलता, करियर, रिश्तों पर संवाद हो।

7. जीवन-मूल्यों की पुनर्स्थापना

किशोरों को प्रकृति एवं पशु-पक्षियों से लगाव बनाए के लिए प्रेरित किया जाए। वे उनकी देखभाल एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक हो। सामा गतिविधियों में रुचि जाग्रत करके उन्हें

सेवा, परोपकार, दान, सहानुभूति, अनुशासन, संयम आदि जीवन-मूल्यों का अभ्यास कराया जाए।

निष्कर्षतः किशोरों का भारतीय संस्कृति से विमुख होना केवल सामाजिक समस्या नहीं, अपितु राष्ट्रीय चेतना का संकट है। किशोर किसी भी राष्ट्र के भविष्य होते हैं, और उनका भ्रमित होना भविष्य को अंधकारमय बना सकता है। यह विमुखता केवल डिजिटल प्रभाव का परिणाम नहीं, अपितु परिवार, शिक्षा, समाज और शासन सभी के स्तर पर संतुलन-भंग का संकेत है। भारतीय संस्कृति में वह शक्ति है जो व्यक्ति को भय से मुक्त, भ्रम से दूर और भटकाव से बाहर लाकर संतुलित, संयमी, संवेदनशील और लक्ष्य-निष्ठ बनाती है। आवश्यकता है कि हम किशोरों को इस संस्कृति की समृद्धि, वैज्ञानिकता, मानवीयता और सार्वभौमिकता से पुनः जोड़ें। जब किशोर भारतीय संस्कृति के मूल्यों-सत्य, कर्तव्य, सेवा, संयम, करुणा और आत्म-विकास को अपनाएँगे, तब वे न केवल अपने जीवन को सही दिशा देंगे, अपितु भारत को भी ज्ञान, शांति और सभ्यता के महान पथ पर आगे बढ़ाएँगे। भारत अपनी विकास यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव पर है और वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनने का लक्ष्य है परन्तु यह तभी संभव है, जब हमारी अधिकांश युवा जनसंख्या इसे प्राप्त करने के लिए दृढ़ता से प्रयास करे। इसके लिए युवाओं को भारतीय संस्कृति की शिक्षा देकर सशक्त बनाने तथा उनकी ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण की दिशा में लगाने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
(वरिष्ठ साहित्यकार)
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585
ईमेल - gsvaish51@gmail.com